The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 11 | November 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वाराणसी में धार्मिक पर्यटन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शिवम पटेल

शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, Email id-cvm9762@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17922440

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 22-11-2025

Published: 10-12-2025

Keywords:

धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक महत्व

ABSTRACT

धार्मिक पर्यटन वैश्विक पर्यटन उद्योग के भीतर तेजी से उभरते क्षेत्रों में से एक है, जो उन लाखों लोगों की आध्यात्मिक इच्छाओं को दर्शाता है जो अपनी आस्था से जुड़ना चाहते हैं। दुनिया के सबसे पुराने बसे शहरों में से एक वाराणसी हिंदू धार्मिक पर्यटन के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में खड़ा है, जो तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को समान रूप से आकर्षित करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य वाराणसी में धार्मिक पर्यटन के विभिन्न आयामों का पता लगाना है, जिसमें इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह विरासत को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में धार्मिक पर्यटन की भूमिका, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों की लगातार बढ़ती आमद के कारण शहर में होने वाले परिवर्तनों की जांच करेगा।

प्रस्तावना

मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी शक्ति पर विश्वास करता है। यह किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय में नहीं अपितु सभी धर्मों में पाया जाता है। लोगों का विश्वास है कि कोई तो ऐसी शक्ति है जो सारे सृष्टि का संचालन करती है। हमारा देश भारत भी उन देशों में है, जहाँ लोगों को अपने धर्म, परंपरा, वेशभूषा के अनुसार रहने की स्वतंत्रता दी गई है। सबको अपने-अपने धार्मिक विश्वास और परम्पराओ के साथ रहने की आजादी है। भारत धार्मिक स्थानों व आस्था का देश है, जहां आस्था लंबे समय से एक स्थल से दूसरे स्थल अथवा देश में जाने का एक विलक्षण माध्यम रहा है। भारत में प्राचीन समय से ही तीर्थाटन यानी धार्मिक पर्यटन की परंपरा रही है। धर्म का पर्यटन के साथ अटूट सम्बन्ध होता है **(पोरिया व अन्य, 2003)।** प्राचीन काल में लोग पैदल या अन्य साधनों से तीर्थाटन करने आते रहें हैं, अब परिवहन के नए साधनों ने धार्मिक पर्यटन को ज्यादा व्यापक व लोकप्रिय बना दिया है। अब यह मात्र तीर्थयात्रा नहीं रहा है बल्कि पर्यटन का एक पर्याय बन गया है। विश्व के विभिन्न भागों में धर्म पर आधारित पर्यटन महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसमे मक्का(सऊदी अरब), लूर्डेस(फ्रांस) और भारत में अमरनाथ, वैष्णो देवी, बद्रीनाथ, केदारनाथ, वाराणसी, उज्जैन, हरिद्वार-ऋषिकेश आदि जैसे तीर्थ स्थल शामिल हैं। जहाँ पर देश व विदेश से लाखों पर्यटक यात्रा करने के लिए आते हैं। स्थानीय और विदेशी दोनों ही पर्यटक तीर्थयात्रा को एक लोकप्रिय पर्यटन गतिविधि मानते

हैं। इसका एक प्रमुख आकर्षण मंदिरों और अन्य तीर्थ स्थलों का भ्रमण करना है। इनमें से अधिकांश तीर्थ यात्राएँ स्वर्ग और सौभाग्य की अवधारणा के रूप में मानी जाती हैं। कई शोधकर्ताओं ने तीर्थयात्रा के पहलू को अलग-अलग संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में पाया है। **जैकोव्स्की और स्मिथ (1992)** ने ज्ञान आधारित पर्यटन को तीर्थस्थलों और गंतव्यों की खोज करने वाले लोगों के रूप में वर्णित किया है। तीर्थयात्रा बाहरी रूप से एक पवित्र गंतव्य के लिए खोज और आंतरिक रूप से आध्यात्मिक उद्देश्यो व आंतरिक समझ के लिए होती है। यह यात्रा धर्मों की शुरुआत से ही अस्तित्व में है। जिसमें कई महिने अथवा साल लगते थे। अतीत में, तीर्थयात्री अक्सर समूहों में यात्रा करते थे और विभिन्न मठों में रात बिताते थे। आज अधिकांश व्यक्तियों के लिए, यह तीर्थयात्रा विश्वासों से प्रेरित होने से बदलकर एक पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होने में बदल गया है। धार्मिक पर्यटन, व्यापक पर्यटन उद्योग के एक उपसमूह के रूप में, धार्मिक या आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए की जाने वाली यात्रा को संदर्भित करता है। पर्यटन का यह रूप भारत में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ धार्मिक और आध्यात्मिक प्रथाएँ रोज़मर्रा की ज़िंदगी से गहराई से जुड़ी हुई हैं। वाराणसी, अपने मंदिरों, घाटों, अनुष्ठानों और गंगा की उपस्थिति के साथ, धार्मिक पर्यटकों को आध्यात्मिक तृप्ति, सांस्कृतिक विसर्जन और धार्मिक अनुष्ठानों में भागीदारी का अनुभव करने के लिए एक अनूठा स्थान प्रदान करता है। विभिन्न क्षेत्रों से तीर्थयात्री धार्मिक अनुष्ठान करने, त्योहारों में भाग लेने और आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने के लिए वाराणसी आते हैं। वर्तमान समय में पर्यटन सबसे बड़े और गतिशील रूप से बढ़ते हुए क्षेत्रों में से एक है, जिसका महत्व सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

वाराणसी में धार्मिक पर्यटन पर इस समाजशास्त्रीय अध्ययन का उद्देश्य धर्म, संस्कृति और पर्यटन के बीच जटिल संबंधों का पता लगाना है, जो इस बात पर केंद्रित है कि धार्मिक पर्यटन शहर के सामाजिक-आर्थिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है। तीर्थयात्रियों और धार्मिक पर्यटकों की आमद से सांस्कृतिक और आर्थिक दोनों तरह के निहितार्थो की पूर्ति कैसे हो रही हैं। अध्ययन लोगों के जीवन में पर्यटको की भूमिका तथा स्थानीय प्रथाओं पर पर्यटन के प्रभाव की भी जांच करेगा। वाराणसी में धार्मिक पर्यटन के समाजशास्त्रीय आयामों का विश्लेषण करके, यह शोध इस बात की व्यापक समझ में योगदान देना चाहता है कि धार्मिक स्थल, पवित्र स्थानों और पर्यटक आकर्षण दोनों के रूप में कैसे कार्य करते हैं। यह इस बात पर गहराई से विचार करेगा कि धार्मिक पर्यटन किस तरह से वाराणसी में सामाजिक पहचान, सामुदायिक संबंधों और आर्थिक पैटर्न को आकार देता है, जो भारत के सबसे प्रतिष्ठित धार्मिक केंद्रों में से एक में परंपरा और आधुनिकता के बीच गतिशील बातचीत में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

धार्मिक पर्यटन की अवधारणा

धार्मिक पर्यटन, पर्यटन के सबसे पुराने रूपों में से एक है **(रिन्शेडे, 1992)**। एक शोध क्षेत्र के रूप में धार्मिक पर्यटन1970 और 80 के दशक में सामने आता हैं। विभिन्न मानवविज्ञानियों और समाजशास्त्रियों ने धार्मिक पर्यटन को अलग अलग दृष्टिकोण से अध्ययन व परिभाषित किया है, **टर्नर और टर्नर (1969)** ने धार्मिक पर्यटन को एक "अनुष्ठान प्रक्रिया", तो **मैककैनेल (1973)** ने 'प्रामाणिक' अनुभवों की खोज के रूप में परिभाषित किया है। ग्रैबर्न ने धार्मिक पर्यटन को ऐसे 'पवित्र यात्रा' के रूप में बताया है, जो लोगों को पवित्र आत्म-ज्ञान प्राप्त करके खुद को बदलने के लिए प्रेरित करती है **(ग्रैबर्न, 1977; टर्नर, 1973)**। **ईड और सैलनो (1991)** ने अपने अध्ययन में धार्मिक पर्यटन को एक विषम घटना के रूप में बताया है, तो वहीं कासिम ने धर्म आधारित

पर्यटन को किसी व्यक्ति की अपनी आस्था के अनुसार विभिन्न अनुष्ठान करते हुए स्वयं की एक नई भावना की खोज है के रूप में बताया है **(कासिम, 2011)**। धार्मिक पर्यटन एक बहुआयामी घटना है जिसमें तीर्थयात्रा से लेकर पवित्र स्थानों, धार्मिक त्योहारों, अनुष्ठानों और अन्य आध्यात्मिक रूप से प्रेरित यात्रा सहित अनेक तरह की गतिविधियाँ शामिल हैं। धार्मिक पर्यटन में आध्यात्मिक स्थलों से संबंधित सेवाओं की एक श्रृंखला शामिल है, जो धार्मिक व धर्मनिरपेक्ष दोनों दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होता है **(राज, ग्रिफिन और ब्लैकवेल, 2015)**। जहां धर्मनिरपेक्ष पर्यटन अक्सर अवकाश, रोमांच या सांस्कृतिक अन्वेषण को प्राथमिकता देता है, वही धार्मिक पर्यटन आध्यात्मिक पूर्ति, पूजा और धार्मिक दायित्व को अपने मूल में रखता है। विद्वानों ने धार्मिक पर्यटन के पीछे की प्रेरणाओं में गहरी धार्मिक भक्ति से लेकर आध्यात्मिक प्रथाओं के बारे में जिज्ञासा, आंतरिक शांति और व्यक्तिगत परिवर्तन की खोज जैसे कई कारण शामिल हैं। हालाँकि, **मैककैनेल (1973)** ने आधुनिक पर्यटकों को प्रामाणिकता की तलाश में धर्मनिरपेक्ष तीर्थयात्री के रूप में देखा जा सकता है। धार्मिक पर्यटन का अध्ययन यात्री की प्रेरणाओं से परे है; इसमें मेजबान समुदायों और पवित्र स्थलों पर ऐसी यात्रा के सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रभावों की जाँच भी शामिल है। धार्मिक पर्यटन, एक ऐसी घटना जो आध्यात्मिक या धार्मिक प्रेरणाओं के साथ यात्रा को जोड़ती है, लंबे समय से मानव इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। धार्मिक पर्यटन गतिविधि पर्यटन प्रेरणा पर आधारित है, उनमें से कुछ सांस्कृतिक प्रेरणा हैं, जो एक संस्कृति, रीति-रिवाज, परंपरा और अन्य पारंपरिक कलाओं को जानने की इच्छा है। पर्यटन अध्ययन एक बहु-विषयक दृष्टिकोण के साथ विकसित किया गया है **(लिकोरिश, 1997)**।

वाराणसी का ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व

दुनिया भर में, लोग आध्यात्मिक पूर्ति, दैवीय हस्तक्षेप या धार्मिक प्रायश्चित की तलाश में पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं। दुनिया के सबसे पुराने बसे शहरों में से एक वाराणसी, ऐसी आध्यात्मिक यात्राओं के लिए एक सर्वोत्कृष्ट गंतव्य के रूप में स्थित है। वाराणसी में पर्यटन का इतिहास उतना ही पुराना रहा है जितना कि मानव जाति है **(निकरसन व कैर, 1998)**। यह शहर हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक भगवान शिव के निवास के रूप में पूजनीय है और माना जाता है कि यह मोक्ष प्राप्त करने या जीवन और मृत्यु के चक्र से मुक्ति पाने का अंतिम गंतव्य है। हिंदू मान्यता के अनुसार, वाराणसी में मरने और गंगा नदी के घाटों पर दाह संस्कार करने से पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है, जिससे यह शहर जीवित और मृत दोनों के लिए एक गंतव्य बन जाता है। इसके अलावा, वाराणसी से होकर बहने वाली पवित्र नदी गंगा को पवित्र करने वाली शक्तियों वाली देवी के रूप में पूजा जाता है और इसके जल में स्नान करने से पापों का नाश होने के साथ साथ आध्यात्मिक प्रगति में सहायता मिलती है। भगवान शिव को समर्पित काशी विश्वनाथ मंदिर हिंदू धर्म में सबसे अधिक पूजनीय मंदिरों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर में दर्शन करने से भक्तों को पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। मंदिर को कई बार नष्ट किया गया और फिर से बनाया गया, जो हिंदू आस्था की दृढ़ता और इस स्थल के स्थायी आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक है। काशी विश्वनाथ के अलावा, वाराणसी में विभिन्न हिंदू देवताओं को समर्पित सैकड़ों अन्य मंदिर हैं, जो इसे दुनिया भर के हिंदुओं के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल बनाते हैं। इन धार्मिक मान्यताओं ने वाराणसी को धार्मिक पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बना दिया है। एक ऐसी घटना जिसने शहर की पहचान, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को आकार दिया है। जिसे विभिन्न नामों से जाना जाता है – काशी, "प्रकाश का शहर" और बनारस – वाराणसी हिंदुओं, जैनियों और बौद्धों की धार्मिक कल्पना में एक विशेष स्थान रखता है। हिंदू धर्म के सात

सबसे पवित्र शहरों में से एक के रूप में, वाराणसी हर साल लाखों तीर्थयात्रियों और आध्यात्मिक साधकों को आकर्षित करता है, जो इसे धार्मिक पर्यटन के अध्ययन का केंद्र बिंदु बनाता है।

भारत में जहाँ धार्मिक पर्यटन, पर्यटन उद्योग का एक बड़ा हिस्सा है, धर्म और यात्रा के बीच परस्पर क्रिया विशेष रूप से स्पष्ट है। वाराणसी प्राथमिक धार्मिक केंद्रों में से एक होने के नाते, धार्मिक पर्यटन के विभिन्न आयामों को समझने के लिए एक आदर्श अध्ययन प्रदान करता है। शहर में हर साल लाखों तीर्थयात्री आते हैं, खास तौर पर महाशिवरात्रि, दिवाली और कार्तिक पूर्णिमा जैसे धार्मिक त्योहारों के दौरान, जब शहर धार्मिक समारोहों का केंद्र बन जाता है। हालाँकि, धार्मिक पर्यटकों की आमद इन त्योहारों की अवधि तक ही सीमित नहीं है। पूरे साल भक्त दैनिक अनुष्ठानों में भाग लेने, धार्मिक समारोह करने, आध्यात्मिक सलाह लेने या बस पवित्र गंगा में स्नान करने के लिए वाराणसी आते हैं। शहर का जीवंत आध्यात्मिक वातावरण, भजनों के जाप, मंदिर की घंटियों की आवाज़ और साधुओं (पवित्र पुरुषों) और तीर्थयात्रियों के दर्शन से पहचाना जाता है, जो न केवल धर्मनिष्ठ हिंदुओं को बल्कि दुनिया भर से आध्यात्मिक साधकों को भी आकर्षित करता है।

धार्मिक पर्यटन की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रथाएँ व तीर्थयात्री

वाराणसी में धार्मिक पर्यटन कई तरह के पर्यटकों को आकर्षित करता है, जिसमें तीर्थयात्रा करने वाले श्रद्धालु हिंदू से लेकर भारत की आध्यात्मिक विविधता से मोहित अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक शामिल हैं। पर्यटकों के दो मुख्य प्रकार हैं:

घरेलू तीर्थयात्री: हिंदू श्रद्धालुओ के लिए वाराणसी की तीर्थयात्रा एक प्रमुख धार्मिक दायित्व मानी जाती है। तीर्थयात्री पूरे भारत से विभिन्न पवित्र दिनों में गंगा स्नान करने, मंदिरों में पूजा करने और अपने पूर्वजों के अंतिम संस्कार जैसे अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए आते हैं। तीर्थयात्री आमतौर पर एक निर्धारित धार्मिक यात्रा कार्यक्रम का पालन करते हैं जिसमें गंगा में स्नान करना, काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन पूजन सहित विभिन्न अनुष्ठान करना जो उन्हें मोक्ष के करीब लाते हैं। धार्मिक पर्यटकों के लिए वाराणसी की यात्रा का मुख्य आकर्षण पवित्र अनुष्ठान करने का अवसर भी है। गंगा में स्नान करना जो आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है, सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में से एक माना जाता है। हिंदुओं का मानना है कि पवित्र नदी में डुबकी लगाने से व्यक्ति के पाप धुल जाते हैं और आध्यात्मिक मोक्ष मिलता है।

काशी विश्वनाथ मंदिर में चढ़ाए जाने वाले प्रसाद और मणिकर्णिका घाट पर दाह संस्कार समारोह भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। मणिकर्णिका घाट को अंतिम संस्कार करने के लिए सबसे पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है और कई हिंदू अपने मृतक प्रियजनों को दाह संस्कार के लिए वाराणसी लाते हैं। यह प्रथा इस विश्वास से उपजी है कि वाराणसी में मरने या इसके पवित्र घाटों पर दाह संस्कार करने से पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। तीर्थयात्रा के अनुभव का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू गंगा आरती में भाग लेना है, जो नदी में अग्नि और प्रार्थना करने का एक भव्य अनुष्ठान है। दशाश्वमेध घाट पर हर शाम आयोजित होने वाली इस आरती में हज़ारों श्रद्धालु आते हैं, जिनमें धार्मिक भक्त और जिज्ञासु पर्यटक दोनों शामिल होते हैं, जो इसे वाराणसी के सबसे प्रतिष्ठित अनुभवों में से एक बनाता है।

अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक पर्यटक: अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों की बढ़ती संख्या में आध्यात्मिक साधक भी शामिल हैं जो प्राचीन ज्ञान और अभ्यास के केंद्र के रूप में वाराणसी की प्रतिष्ठा से आकर्षित होते हैं। कई लोग हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, योग और ध्यान के बारे

में जानने या बस प्रसिद्ध गंगा आरती देखने के लिए आते हैं। ये पर्यटक अक्सर धार्मिक और सांस्कृतिक अनुभवों को जोड़ते हुए ध्यान शिविरों, आध्यात्मिक पाठ्यक्रमों या विरासत पर्यटन में भाग लेते हैं, जो शहर के मंदिरों, घाटों और पवित्र स्थलों की यात्रा कराते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए वाराणसी पारंपरिक हिंदू अनुष्ठानों से कहीं ज़्यादा अनुभूति प्रदान करता है। कई लोग योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसी भारतीय आध्यात्मिक प्रथाओं की गहरी समझ की तलाश में आते हैं। वाराणसी और उसके आस-पास के आध्यात्मिक आश्रम और आश्रम इन विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जो व्यक्तिगत परिवर्तन या मन की शांति चाहने वाले आगंतुकों के लिए एक गहन अनुभव प्रदान करते हैं। इस शहर का बौद्ध धर्म से जुड़ाव, विशेष रूप से सारनाथ से इसकी निकटता, आध्यात्मिक पर्यटन के अनुभव में एक और आयाम जोड़ती है। सारनाथ, जहाँ बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, दुनिया भर से बौद्ध तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है, खासकर जापान, थाईलैंड और श्रीलंका जैसे बड़ी बौद्ध आबादी वाले देशों से। सारनाथ स्तूप और आस-पास के बौद्ध मंदिर आगंतुकों को आध्यात्मिक शांति प्रदान करते हैं और बौद्ध धार्मिक पर्यटन के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में काम करते हैं।

वाराणसी में धार्मिक पर्यटन की समाजशास्त्रीय प्रासंगिकता

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, वाराणसी में धार्मिक पर्यटन जांच का एक समृद्ध क्षेत्र प्रस्तुत करता है, जो इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि धार्मिक प्रथाएँ, आर्थिक अनिवार्यताएँ और सांस्कृतिक संपर्क किस तरह पर्यटकों और स्थानीय निवासियों दोनों के दैनिक जीवन को आकार देते हैं। धार्मिक पर्यटन में समाजशास्त्रीय रुचि के प्रमुख क्षेत्रों में से एक पवित्र स्थलों और व्यावसायीकरण के बीच का संबंध है। जबकि वाराणसी ने एक पवित्र शहर के रूप में अपनी पहचान बनाए रखी है, धार्मिक पर्यटकों की आमद ने धार्मिक प्रथाओं के व्यावसायीकरण और आध्यात्मिक अनुभवों के वस्तुकरण को भी बढ़ावा दिया है। मंदिर, घाट और अन्य पवित्र स्थल न केवल पूजा के स्थान बन गए हैं, बल्कि आर्थिक आदान-प्रदान के भी स्थान बन गए हैं, जहाँ धार्मिक अनुष्ठान, प्रसाद और सेवाएँ अक्सर वित्तीय लेन-देन द्वारा मध्यस्थता की जाती हैं। यह घटना धार्मिक पर्यटन के संदर्भ में पवित्र और धर्मनिरपेक्ष के बीच की सीमाओं के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है।

इसके अलावा, वाराणसी में धार्मिक पर्यटन सामाजिक पहचान और सामुदायिक संबंधों को आकार देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई तीर्थयात्रियों के लिए, वाराणसी की यात्रा एक गहरा परिवर्तनकारी अनुभव है जो उनकी धार्मिक पहचान और आध्यात्मिक मान्यताओं को पुष्ट करता है। साथ ही, धार्मिक पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के बीच बातचीत एक गतिशील सामाजिक वातावरण बनाती है जहाँ पारंपरिक प्रथाओं, मूल्यों और विश्वासों पर लगातार बातचीत की जाती है और उन्हें फिर से परिभाषित किया जाता है और यह पर्यटकों और स्थानीय धार्मिक अधिकारियों, जैसे कि पुजारियों के बीच संबंधों में विशेष रूप से स्पष्ट है, जो अक्सर पवित्र और अपवित्र के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं, पर्यटकों को धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं जो वाराणसी के अनुभव को परिभाषित करते हैं। शहर में धार्मिक संस्थानों की भूमिका धार्मिक पर्यटन के समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए भी केंद्रीय है। वाराणसी सैकड़ों मंदिरों, आश्रमों और धार्मिक संगठनों का घर है, जिनमें से कई विशेष रूप से धार्मिक पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। ये संस्थान न केवल पूजा स्थल के रूप में बल्कि धार्मिक शिक्षा, सामाजिक सेवाओं और सांस्कृतिक संरक्षण के केंद्र के रूप में भी काम करते हैं। हालाँकि, धार्मिक पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने इन संस्थानों के संचालन के तरीके में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जिनमें से कुछ ने पर्यटकों की माँगों को पूरा करने

के लिए अधिक व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाए हैं। यह बदलाव धार्मिक प्रथाओं की प्रामाणिकता और वाराणसी की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर धार्मिक पर्यटन के प्रभाव के बारे में महत्वपूर्ण सवाल उठाता है। जबकि धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में वाराणसी का महत्व अच्छी तरह से प्रलेखित है, शहर में धार्मिक पर्यटन के समाजशास्त्रीय आयाम भी उतने ही आकर्षक और अकादमिक ध्यान के योग्य हैं। धार्मिक पर्यटन, अपनी प्रकृति से, कई सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक प्रक्रियाओं से जुड़ा हुआ है, जो न केवल पर्यटकों को बल्कि स्थानीय समुदायों, धार्मिक संस्थानों और शहर के व्यापक सामाजिक ताने-बाने को भी प्रभावित करता है।

धार्मिक पर्यटन के आर्थिक प्रभाव

हाल के आँकड़ों के अनुसार, पर्यटन दुनिया की आय का लगभग 10% प्रदान करता है और दुनिया के लगभग दसवें हिस्से के कार्यबल को रोजगार देता है**(खान, 2005)**। पर्यटन को कई देशों की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। आज देश के विभिन्न हिस्सों में पर्यटन से संबंधित बुनियादी ढाँचे ने स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है और स्थानीय कला और शिल्प को बढ़ावा देने में मदद की है। पर्यटन ने पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने में भी योगदान दिया है। यह आधुनिक दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ने वाला उद्योग है। पर्यटन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें लोग यात्रा करते है,कम से कम 24 घंटे से अधिक समय तक रुकते हैं तथा वहां के विभिन्न वस्तुओं व खाद्य पदार्थ का उपभोग करते हैं **(खंडारी व चंद्रा, 2004)**। मीथन पर्यटन और उपभोग के बारे में बात करते समय दृश्य पहलू पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है। वह पर्यटन की विशिष्टता को स्थान की प्रतीकात्मक अर्थव्यवस्था के हिस्से के रूप में उजागर करते हैं, जो स्थानीय उत्पादन और प्रतीकों के उत्पादन को जोड़ता है **(मीथन, 2001)**। वाराणसी में धार्मिक पर्यटन केवल आध्यात्मिक या सांस्कृतिक घटना नहीं है; यह एक प्रमुख आर्थिक चालक भी है। शहर की अर्थव्यवस्था तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की आमद पर बहुत अधिक निर्भर है, जो आतिथ्य, खुदरा, परिवहन और धार्मिक सेवाओं सहित कई उद्योगों में योगदान करते हैं। होटल, गेस्टहाउस और रेस्तरां विशेष रूप से धार्मिक पर्यटकों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं, जो तीर्थयात्रियों के आध्यात्मिक मूल्यों और आहार प्रतिबंधों के अनुरूप आवास और भोजन प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, धार्मिक पर्यटन उद्योग के इर्द-गिर्द प्रसाद, मूर्तियाँ और अनुष्ठान की वस्तुओं सहित धार्मिक सामग्री का एक संपन्न बाज़ार विकसित हुआ है। स्थानीय कारीगरों और शिल्पकारों को स्मृति चिन्ह और धार्मिक कलाकृतियों की मांग से भी लाभ होता है, जिनमें से कई पारंपरिक बनारसी शैली में हस्तनिर्मित हैं।

निष्कर्ष

वाराणसी में धार्मिक पर्यटन एक जटिल घटना है जो आस्था, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और विरासत को आपस में जोड़ती है। यह शहर लाखों लोगों के लिए आध्यात्मिक महत्व का प्रतीक बना हुआ है, लेकिन भीड़भाड़, पर्यावरणीय गिरावट और व्यावसायीकरण से उत्पन्न चुनौतियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वाराणसी एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल और धार्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में काम करना जारी रखे, पर्यटन को बढ़ावा देने और शहर की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अखंडता को संरक्षित करने के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है। जैसा कि वाराणसी आधुनिक पर्यटन रुझानों के जवाब में विकसित हो रहा है, इसकी प्राचीन परंपराओं को सावधानीपूर्वक बनाए रखा जाना चाहिए। शहर के

भविष्य की सुरक्षा के लिए सरकारी पहल, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और जिम्मेदार पर्यटन प्रथाएँ महत्वपूर्ण हैं। सतत पर्यटन विकास और पर्यावरणीय और अवसंरचनात्मक चुनौतियों को दूर करने के प्रयासों के माध्यम से, वाराणसी आने वाली पीढ़ियों के लिए धार्मिक पर्यटकों का स्वागत करना जारी रख सकता है, जिससे दुनिया के सबसे पवित्र स्थलों में से एक के रूप में इसकी स्थिति बनी रहेगी।

References

- Khan, M. A., Introduction to Tourism, Anmol publication, New Delhi, 2005, pp-2-4.
- Kandari, O.P. and Chandra Ashish Tourism Development Principle and Practices, Shree publishers & Distributors, New Delhi, 2004, p. 124.
- Rinschede, G. (1992). Forms of religious tourism. Annals of Tourism Research, 19(1), 51–67. https://doi.org/10.1016/0160-7383(92)90106-Y.
- Raj, R., Griffin, K., & Blackwell, R. (2015). Motivations for religious tourism, pilgrimage, Festivals and events. In R. Raj, & K. Griffin (Eds.). Religious tourism and pilgrimage management: An international perspective (pp. 103–117). Wallingford: CAB International.
- MacCannell, D. (1973). Staged authenticity: Arrangements of social space in tourist settings. American Journal of Sociology, 79(3), 589–603. https://doi.org/10.1086/225585.
- Jackowski, A., & Smith, V. L. (1992). Polish pilgrim-tourists. Annals of Tourism Research, 19(1), 92–106. https://doi.org/10.1016/01607383(92)90109-3.
- Singh, Rana P.B., Banaras: Making of India's Heritage City. Cambridge Scholars Publishing, 2009.
- Eck, Diana L., Banaras: City of Light. Columbia University Press, 1999.
- Mitra, Saugata, and Mukherjee, Soumen, "Pilgrimage Tourism and Sustainable Development: A Case Study of Varanasi," Indian Journal of Tourism and Management, vol. 12, no. 1, 2020.
- Ministry of Tourism, Government of India, Swadesh Darshan Scheme Guidelines, 2021.
- Kumar, Arun, "The Environmental Impact of Pilgrimage Tourism in Varanasi," Journal of Environmental Management, vol. 150, 2019.
- Meethan K. 2001. Tourism in Global Society: Place, Culture, Consumption, Basingstoke: Palgrave.
- Lickorish, L.J. (1997) An Introduction toTourism. Heinemann: Butterworth.

- Kasim, A. (2011). Balancing Tourism and Religious Experience: Understanding Devotees' Perspectives on Thaipusam in Batu Caves, Selangor, Malaysia. Journal of Hospitality Marketing & Management, 20, 441–456.
- Poria, Y., Butler, R., & Airey, D. (2003). Tourism, religion and religiosity: A Holy Mess. Current Issues in Tourism, 6(4), 340–363.
- Turner, V., & Turner, E. (1969). The ritual process. London: Routledge.
- Turner, V. (1973). The center out there: Pilgrim's goal. History of Religions, 123, 191-230.
- Graburn, N. H. H. (1977). Tourism: The sacred journey. In V. L. Smith. (Ed.), Hosts and guests: The anthropology of tourism (pp. 17-31). Philadelphia, PA: University of Pennsylvania Press.
- Eade, J., & Sallnow, M. J. (Eds.). (1991). Contesting the sacred: The anthropology of Christian Pilgrimage. London: Routledge.